

NEERAJ®

चित्रकला (सिद्धान्त)

(Painting-Theory)

N-225

**Chapter wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

N.I.O.S. Class – X
National Institute of Open Schooling

By : Vaishali Gupta



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6

E-mail: info@neerajbooks.com

Mob.: 8510009872, 8510009878

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 160/-

Published by:



NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office : 1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006

E-mail: info@neerajbooks.com | Website: www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printer

Disclaimer/T&C

1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
4. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 3-4 days after we receive your order and it takes Nearly 4-5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 8-9 days).

CONTENTS

चित्रकला (सिद्धान्त) (Painting-Theory)

Based on: NATIONAL INSTITUTE OF OPEN SCHOOLING - X

<i>S.No.</i>	<i>Chapters</i>	<i>Page</i>
	Solved Sample Paper - 1	1
	Solved Sample Paper - 2	1
	Solved Sample Paper - 3	1-2
	Solved Sample Paper - 4	1-2
	Solved Sample Paper - 5	1-2

<i>S.No.</i>	<i>Chapter</i>	<i>Page</i>
मॉड्यूल-1 : भारतीय कला की भूमिका (Module 1: Role of Indian Art)		
1.	3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन (History and Appreciation of Art (From 3000 BC to 600 AD))	1
2.	सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन (History of Appreciation of Art From 7th AD to 12th AD)	21
3.	13वीं शती (AD) से 18वीं शती (AD) तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन (History and Appreciation of Art from 12th Century AD to the 18th Century AD)	31
4.	भारत की लोक कला (Folk Art of India)	42

<i>S.No.</i>	<i>Chapter</i>	<i>Page</i>
<hr/> मॉड्यूल-2 : पाश्चात्य कला की भूमिका (Module 2: Role of Western Art) <hr/>		
5.	पुनर्जागरण (नवजागरण) (Renaissance)	51
6.	प्रभाववाद (Impressionism)	63
7.	घनवाद, अतिथार्थवाद तथा अमूर्त कला (Cubism, Surrealism and Abstract Art)	76
<hr/> मॉड्यूल-3 : समकालीन भारतीय कला की भूमिका (Module 3: Role of Contemporary Indian Art) <hr/>		
8.	समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार (Pioneers of Contemporary Indian Art)	89
9.	समकालीन भारतीय कला (Contemporary Indian Art)	99
		■ ■

**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

Solved Sample Paper - 1

Based on NIOS (National Institute of Open Schooling)

चित्रकला (सिद्धान्त) - X

(Painting-Theory)

समय : 1½ घंटे]

[पूर्णांक : 30

नोट : (1) सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(2) 1 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 10 शब्दों में दीजिए।

(3) 2 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए।

(4) 3 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 50 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 1. मौर्य और शुंगों के द्वारा कला के प्रति दिये गये योगदान पर कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 3, पृष्ठ-6, प्रश्न 6

प्रश्न 2. अजंता चित्रकला की लाक्षणिकताएँ क्या हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-13, प्रश्न 4

प्रश्न 3. होयसल शिल्प पर अतिसंक्षिप्त में लिखें।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-25, प्रश्न 5

प्रश्न 4. चित्रकला की "पहाड़ी शाखा" के कोई एक क्षेत्र का नाम लिखिए। इस शाखा के कोई एक चित्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-31, 'सामान्य विवरण'

प्रश्न 5. कोलम चित्रकला की पद्धति पर लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-45, पाठगत प्रश्न 4.1, प्रश्न 3

प्रश्न 6. कांथा क्या है? संक्षिप्त में समझाइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-47, प्रश्न 3

प्रश्न 7. भारत की कम से कम दो लोक कलाओं की शैली के नाम लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-45, पाठगत प्रश्न 4.1, प्रश्न 1

प्रश्न 8. "नाइट वॉच" चित्र क्या दर्शाता है? इस कार्य का महत्व की लाक्षणिकताएँ दर्शाइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-54, 'दि नाइट वाच', 'सामान्य विवरण'

अथवा

प्रख्यात चित्र "बर्थ ऑफ वीनस" का वर्णन कीजिए। इस चित्र में 'वीनस' क्या संकेत करता है?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-57, प्रश्न 2

प्रश्न 9. 'लेन्डस्केप' चित्रांकन करने में सामान्य तौर पर प्रभाववादी की खास दिलचस्पी क्या होती है?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-108, पाठगत प्रश्न 9.4, प्रश्न 2, 3

प्रश्न 10. सीझाने का 'स्टील लाइफ वीथ ऑनीयन' पर एक टीकात्मक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-69, 'पाठगत प्रश्न 6.4, प्रश्न 2

प्रश्न 11. रीनोइर की कला की शैली को समझाइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-70, पाठगत अभ्यास प्रश्न, प्रश्न 2

प्रश्न 12. 'घनवाद' (क्यूबिज्म) की व्याख्या आप कैसे करेंगे?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-80, पाठगत अभ्यास प्रश्न, प्रश्न 1

प्रश्न 13. केन्डींस्की के कोई एक चित्र को चुनकर वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-80, पाठगत प्रश्न 7.3, प्रश्न 3

प्रश्न 14. "परसिस्टन्स ऑफ मेमरी" पर एक अति लघु टिप्पणी लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-80, पाठगत प्रश्न 7.2, प्रश्न 4

प्रश्न 15. राजा रवि वर्मा पर एक प्रशंसात्मक निबंध लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-8, पृष्ठ-100, प्रश्न 1

प्रश्न 16. "प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप" के बारे में आप क्या जानते हैं? इस ग्रुप के कुछ कलाकारों के नाम बताइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-108, पाठगत प्रश्न 9.4, प्रश्न 1

प्रश्न 17. भारतीय भित्ति चित्र की तकनीकी पर अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-107, पाठगत प्रश्न 9.2, प्रश्न 1, 2



Solved Sample Paper - 2

Based on NIOS (National Institute of Open Schooling)

चित्रकला (सिद्धान्त) - X

(Painting-Theory)

समय : 1½ घंटे]

[पूर्णांक : 30

नोट : (1) सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(2) 1 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 10 शब्दों में दीजिए।

(3) 2 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए।

(4) 3 अंक वाले प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 50 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 1. गुप्तकालीन चित्रों की क्या विशेषताएँ हैं?
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-7, प्रश्न 7

प्रश्न 2. सिंधु घाटी सभ्यता की नृत्यांगना के बारे में संक्षेप में लिखिए।
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'सामान्य विवरण'

प्रश्न 3. कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण किसने किया था? पादक्रमगत प्रतिमा को क्या बजाते हुए दिखाया गया है?
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-23, 'सामान्य विवरण'

प्रश्न 4. जैन लघुचित्रों की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-32, 'सामान्य विवरण'

प्रश्न 5. फुलकारी का क्या अर्थ है?
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-46, पाठगत प्रश्न 4.2, प्रश्न 1

प्रश्न 6. भारत में फर्श पर बनाई जाने वाली किन्हीं दो सजावटों के नाम लिखिए।
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-45, पाठगत प्रश्न प्रश्न 4.1, प्रश्न 1

प्रश्न 7. 'कोलम' क्या है? कोलम में प्रयोग की जाने वाली मोटिफ क्या हैं?
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-42, 'सामान्य विवरण'

प्रश्न 8. "मोनालिसा" चित्र की व्याख्या कीजिए।
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-52, 'सामान्य विवरण'
अथवा

रेमब्रां के किसी एक चित्र की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-54, 'दि नाइट वाच', 'सामान्य विवरण'

प्रश्न 9. डेगा दूसरे प्रभाववादी चित्रकारों की अपेक्षा भिन्न क्यों है? डेगा ने "डांस क्लास" को कब चित्रित किया?
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-65, 'डांस क्लास', 'सामान्य विवरण'

प्रश्न 10. प्रभाववादी कलाशैली के विकास में चित्रकार मॉने का क्या योगदान है?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-71, प्रश्न 1

प्रश्न 11. वेन गग के चित्र 'स्टारी नाइट' की विशेषताओं के बारे में आप क्या जानते हैं? 'स्टारी नाइट' चित्र क्या बताता है?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-71, प्रश्न 3

प्रश्न 12. कुछ विशेष कलाकृतियों को "अमूर्त कला" का नाम क्यों दिया गया? एक ऐसे ही चित्र का नाम लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-83, प्रश्न 4

प्रश्न 13. "परसिस्टेंस ऑफ मेमोरी" चित्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-77, 'परसिस्टेंस ऑफ मेमोरी', 'सामान्य विवरण'

प्रश्न 14. पिकासो पर एक प्रशंसात्मक लघु टिप्पणी लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-84, प्रश्न 5

प्रश्न 15. "ब्रह्मचारीज नामक चित्र के संयोजन का वर्णन कीजिए। इस चित्र में उसे किस यूरोपियन शैली ने प्रभावित किया?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-8, पृष्ठ-95, 'सामान्य विवरण'

प्रश्न 16. चोला मण्डलम क्या है? उसका पनिकर के साथ क्या संबंध है?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-108, पाठगत प्रश्न 9.3, प्रश्न 2

प्रश्न 17. भित्ति चित्र तकनीक (Fresco Buono) के बारे में दो पंक्तियाँ लिखें। विनोद बिहारी मुखर्जी ने इसका प्रयोग कैसे लिया?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-107, पाठगत प्रश्न 9.2, प्रश्न 1, 2

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

मॉड्यूल-1 : भारतीय कला की भूमिका
(Module 1: Role of Indian Art)

3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक कला का
इतिहास तथा मूल्यांकन

(History and Appreciation of Art (From 3000 Bc to 600 AD))

1

परिचय

कला एवं हस्तकला का इतिहास बहुत पुराना है। सिंधु घाटी सभ्यता से मौर्य वंशावली तक मानव धीरे-धीरे कला के क्षेत्र में आगे बढ़ता रहा। भारतीय कला के इतिहास में मौर्य युग के कलाकारों ने एक नये युग की शुरुआत की। अशोक युग की कला के अतुलनीय नमूने भारतीय कला की धरोहर हैं। उस युग में कला की अभिव्यक्ति के नमूने देवी-देवताओं की मूर्तियों में देखे जा सकते हैं। मध्य प्रदेश में स्थित सांची में सांगवशियों के वास्तुकला के नमूने देखे जा सकते हैं। इसी युग में वास्तुकला में प्रतिमाओं के निर्माण कार्य की शुरुआत हुई। गुप्तकालीन युग में मानवीय आवृत्तियों के प्रस्तुतीकरण में सुधारात्मक परिवर्तन हुए। गुप्तकालीन वास्तुकला में कला, निपुणता, पूर्णता व कल्पना शक्ति का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है। गुप्तकालीन कला के मुख्य गुण तथा उस युग की विशेष पहचान थी-होटों का थोड़ा-सा टेढ़ापन, मूर्ति की आकृति में गोलाई, लकड़ी पर की गई खुदाई तथा सरलता। अजंता के प्रसिद्ध चित्र इसी युग में बनाए गए थे। इस युग में चित्रों तथा मूर्तियों के अलावा गुफाओं व मंदिर वास्तुकला में भी काफी उन्नति हुई।

अध्याय का विहंगावलोकन

नृत्यांगना/नृत्य करती हुई लड़की

शीर्षक	:	नृत्यांगना
माध्यम	:	मैटल (धातु)
समय (युग)	:	हड़प्पा काल (2500 ईसा पूर्व)
स्थान	:	मोहनजोदड़ो
आकार	:	लगभग 4 इंच

कलाकार	:	अज्ञात
संकलन	:	भारतीय संग्रहालय, नई दिल्ली



सामान्य विवरण

धातु की बनी नृत्यांगना की मूर्ति सिंधु घाटी के कलाकारों की कलात्मकता तथा तकनीकी कौशल को उजागर करती है। मूर्ति देखने में पतली व लंबी है तथा इसमें एक लयात्मकता है। इस वास्तुकला पर कुछ ध्यान देने योग्य बातें हैं; जैसे कि मूर्ति को निःवस्त्र दिखाया गया है और उसके बायें हाथ में कंधों तक चूड़ियां हैं; जैसे कि राजस्थान और गुजरात के आदिवासी लोगों

2 / NEERAJ : चित्रकला (सिद्धान्त) (N.I.O.S.-X)

के हाथों में होती हैं। इसकी दूसरी विशेषता है—इसका केश विन्यास। इसके बालों का जूड़ा बनाया गया है। यह मूर्ति अपनी कमर पर दायां हाथ रखकर तथा बायां हाथ अपनी जांघ पर रखकर लेटे रहने की मुद्रा में है। इस मूर्ति से स्पष्ट होता है कि उस युग में कलाकार धातु पर कलाकृति बनाने में काफी निपुण थे। हालांकि इस मूर्ति की ऊँचाई लगभग 4 इंच है किन्तु फिर भी यह देखने में बड़ी लगती है। यह 'नाचती' हुई लड़की की मूर्ति कला का अद्भुत नमूना है।

रामपुरवा बुल कैपिटल

शीर्षक	:	रामपुरवा बुल कैपिटल
माध्यम	:	पॉलिश किया हुआ बालू का पत्थर
समय (युग)	:	मौर्यकाल—ईसा पूर्व तीसरी सदी
प्राप्ति स्थान	:	रामपुरवा
आकार	:	लगभग 1 फीट
कलाकार	:	अज्ञात
संकलन	:	भारत संग्रहालय, कोलकाता



j lei jpk crr oG Vy

सामान्य विवरण

सम्राट अशोक ने भगवान बुद्ध के सद्बचनों को नयी राज आज्ञाओं को स्तंभों, चट्टानों तथा पत्थरों के टुकड़ों पर खुदवाया था। उनके स्तंभ के तीन हिस्से हुआ करते थे। पहला, आधार होता था, जो बड़े हुए तीर की भांति होता था। दूसरा भाग स्तंभ का सुसज्जित उच्च स्थान होता था। यह भाग 'शीर्ष' कहलाता था। शीर्ष पर प्रायः एक या अधिक पशुओं की आकृतियाँ उल्टे कमल के साथ खुदी होती थीं। अशोक के काल में बने शीर्षों में सबसे अधिक प्रसिद्ध सांड/बैल का शीर्ष है, जिसे रामपुरवा बुल कैपिटल के नाम से जाना जाता है। यह रामपुरवा से प्राप्त

हुआ, इसलिए यह इसी नाम से प्रचलित हो गया। इस शीर्ष का आधार एक घण्टी के आकार के उल्टे कमल जैसा है, उसके बाद शीर्षफलक बना हुआ होता था, जिस पर राजकीय बैल का सिर रखा हुआ होता था। शीर्षफलक के चारों ओर फूल-पत्तियाँ बनाई गई हैं। जानकारों का मानना है कि इसकी प्रेरणा उन्हें मध्य-पूर्व या ग्रीक प्रणाली से प्राप्त हुई होगी। कमल व शीर्षफलक के ऊपर जो बैल है, उसकी अपनी ही सुंदरता है। हालांकि चार टांगों के मध्य पत्थर के टुकड़े को खोदा नहीं गया है, तब भी बैल की सुंदरता में कोई कमी दिखाई नहीं देती है। बैल की आकृति से उसके भारी-भरकम होने तथा उसकी शक्ति

का अंदाजा लगाया जा सकता है और इसी से कलाकार की निपुणता झलकती है। वैसे कमल का जो आधार बनाया गया है और शीर्षफलक की सजावट बैल की सामान्य प्रस्तुति को थोड़ा कम करती है। बैल पर जो खुदाई की गई है, वह भारतीय मूर्तिकारों की कला की बारीकी को दर्शाती है। बैल के शीर्ष पर पॉलिश की गई है, जिससे वह चमकता है, यह एक प्रमुख विशेषता है, जोकि अशोक युग से मौर्य युग के मूर्तिकारों में रही है। एक विद्वान का यह मानना है कि अच्छी पॉलिश करने का यह गुण उन्होंने मध्य-पूर्व के मूर्तिकारों से सीखा है।

अश्वेत राजकुमारी

शीर्षक	: अश्वेत राजकुमारी
माध्यम	: भित्ति-चित्र
समय	: दूसरी शताब्दी (ईसवी) से छठी शताब्दी (ईसवी)
उपलब्धि स्थान	: अजन्ता
आकार	: 20 फीट × 6 फीट (लगभग)
कलाकार	: अज्ञात



अश्वेत राजकुमारी

सामान्य विवरण

अजन्ता गुफाएं, महाराष्ट्र में औरंगाबाद जिले के पास हैं, वहीं के गांव 'अजन्ता' से इनका नाम अजन्ता पड़ा। कुल 30 गुफाएं हैं, जिनमें से कुछ पूर्ण तथा कुछ अपूर्ण हैं। अजन्ता की कलाकृतियां दो चरणों में पूर्ण हुईं। प्रथम चरण है—हीनयान, जिसमें भगवान बुद्ध को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है। दूसरा चरण है—महायान, जिसमें भगवान बुद्ध को मानवीय रूप में दर्शाया गया है। ज्यादातर अजन्ता भित्ति-चित्रों का निर्माण

3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन / 3

वाकाटक काल में हुआ। अजन्ता में बने भित्ति-चित्र फ्रैस्को पद्धति से नहीं, बल्कि टैम्परा पद्धति से बने हैं। इन भित्ति-चित्रों का विषय धार्मिक था, किन्तु इसके साथ-साथ कलाकारों को यह स्वतंत्रता थी कि वे अपनी रचनात्मक एवं कल्पनात्मक कला का प्रदर्शन कर सकते हैं। अजन्ता चित्रों में अश्वेत राजकुमारी (Black Princess) को सर्वोत्तम कृति माना जाता है। इन चित्रों को देखने से कलाकारों की सिद्धहस्तता व अपनी तूलिका पर नियंत्रण का अंदाजा लगाया जा सकता है। इसमें कलाकार ने अंगों का गूढ़ सामंजस्य, चेहरे का थोड़ा-सा तिरछापन एवं आंखों की नक्काशी की है, वह देखते ही बनती है। यहां तक कि जो चित्र क्षतिग्रस्त हो चुके हैं, उनमें भी रंगों का सौंदर्य नजर आता है। चित्रों में संगीत की गीतात्मकता-सी प्रतीत होती है। शरीर के अंगों की परिरेखाएं तथा उनकी कोमलता, गर्दन का थोड़ा-सा झुकाव एवं सरलता-चित्रों में एक अनोखी विशेषता दर्शाती है। जिन रंगों का इसमें प्रयोग किया गया है, वे बहुत ही सहज तथा कम चटकीले हैं।

पाठगत प्रश्न 1.1

प्रश्न 1. 'नाचती लड़की' की धातु मूर्ति हमें कहां से प्राप्त हुई है?

उत्तर—नाचती लड़की की धातु मूर्ति हमें मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई है।

प्रश्न 2. इसकी ऊँचाई क्या है?

उत्तर—इसकी ऊँचाई लगभग 4 इंच है।

प्रश्न 3. 'नाचती लड़की' क्या खड़ी अथवा बैठी हुई है?

उत्तर—नाचती लड़की खड़ी हुई है।

प्रश्न 4. 'नाचती लड़की' ने क्या परिधान पहन रखा है?

उत्तर—नाचती लड़की ने कोई परिधान नहीं पहना, वह निःवस्त्र है।

प्रश्न 5. 'नाचती लड़की' की मूर्ति की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता क्या है?

उत्तर—नाचती लड़की की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता उसके केश विन्यास हैं, बालों का जूड़ा बनाया गया है। इसके अलावा उसके बाए हाथ में कंधों तक चूड़ियां दिखाई गई हैं।

प्रश्न 6. 'नाचती लड़की' का केश-विन्यास कैसा है?

उत्तर—नाचती लड़की के बालों का जूड़ा बना हुआ है।

पाठगत प्रश्न 1.2

प्रश्न 1. बैल का शीर्ष मिला?

उत्तर—बैल का शीर्ष रामपुरवा से मिला है

प्रश्न 2. बैल के शीर्ष का आधार कैसा है?

उत्तर—बैल के शीर्ष का आधार एक घाटी के आकार का उल्टे कमल जैसा है।

प्रश्न 3. बैल के शीर्ष के शीर्षफलक पर क्या रखा गया है?

उत्तर—बैल के शीर्षफलक के चारों ओर पेड़-पौधों की चित्रकारी है।

प्रश्न 4. अब बैल का शीर्ष कहाँ है?

उत्तर—इसे भारतीय संग्रहालय में रखा गया है।

प्रश्न 5. बैल के शीर्ष की अति-विशेषता क्या है?

उत्तर—बैल के शीर्ष की अति-विशेषता यह है कि इसे पॉलिश किये गए चमकदार पत्थर से बनाया गया है।

पाठगत प्रश्न 1.3

प्रश्न 1. अजंता की गुफाएँ कहाँ हैं?

उत्तर—अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद के समीप हैं।

प्रश्न 2. किस चरण में भगवान बुद्ध को प्रतीक रूप में दिखाया गया है?

उत्तर—हीनयान चरण में भगवान बुद्ध को प्रतीक के रूप में दिखाया गया है।

प्रश्न 3. अश्वेत राजकुमारी में किस प्रकार के रंगों का प्रयोग किया गया है?

उत्तर—अश्वेत राजकुमारी में जिन रंगों का प्रयोग किया गया है, वे बहुत ही सहज तथा कम चटकिले हैं।

प्रश्न 4. अश्वेत राजकुमारी किस युग की कृति है?

उत्तर—अश्वेत राजकुमारी दूसरी शताब्दी ईसवी से छठी शताब्दी ईसवीके समय की है।

पाठांत अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. सिंधु घाटी सभ्यता के कार्यों को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक है, जो मुख्य रूप से दक्षिण-एशिया से उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में, जो आज तक उत्तर-पूर्व अफगानिस्तान और पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम में फैली है। यहाँ के नगरों में अनेक व्यवसाय किये जाते थे। मिट्टी के बर्तन बनाने में ये लोग

बहुत कुशल थे। मिट्टी के बर्तनों पर काले रंग से भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्र बनाये जाते थे। यहाँ पर कपड़ा व्यवसाय भी काफी अच्छा था, उसका विदेशों में निर्यात भी होता था। इसके अलावा यहाँ मनके व ताबीज बनाने का कार्य भी अच्छा था। यहाँ के लोग आपस में पत्थर, धातु शल्क आदि का व्यापार करते थे।

एक बड़े भू-भाग में ढेर सारी सील एकरूप लिपि वाली तथा मानकीकृत मापतौल के प्रमाण मिले हैं। उन्हें चक्के का ज्ञान भी था और शायद आजकल के इक्के जैसा कोई वाहन प्रयोग करते थे। वे अफगानिस्तान तथा ईरान से व्यापार करते थे। उन्होंने उत्तरी अफगानिस्तान में एक वाणिज्यिक उपनिवेश स्थापित किया था, जिससे उन्हें व्यापार करने में सुविधा होती थी। बहुत-सी हड़प्पाई सील मेसोपोटामिया में मिली हैं, जिनसे लगता है कि मेसोपोटामिया से भी उनका व्यापार संबंध था। मेसोपोटामिया के अभिलेखों में मेलुहा के साथ व्यापार के प्रमाण मिले हैं।

हालांकि इस युग के लोग पत्थरों के बहुत सारे औजार तथा उपकरणों का प्रयोग करते थे, किन्तु वे कांसे के निर्माण से भी अच्छी तरह से परिचित थे। तांबे तथा टिन मिलाकर धातु-शिल्पी कांस्य का निर्माण करते थे, हालांकि यहाँ दोनों में से कोई भी खनिज अधिक मात्रा में उपलब्ध नहीं था। यहाँ लोग सूती कपड़े बुनते थे, नाव बनाते थे, मुद्रा व मूर्ति निर्माण के साथ बर्तन बनाना भी इनका प्रमुख कार्य था। यहाँ के लोगों ने लेखन कला का आविष्कार भी किया था। हड़प्पाई लिपि का प्रथम नमूना 1853 ईसवी में मिला था तथा 1923 में पूरी लिपि प्रकाश में आई, किन्तु अभी तक उसे पढ़ा नहीं जा सका है। लिपि के ज्ञान के कारण निजी संपत्ति का हिसाब-किताब करना आसान हो गया था।

व्यापार के लिए इन्हें मापतौल की जरूरत पड़ी और उन्होंने इसके लिए कई वस्तुओं का प्रयोग किया। बाट की भाँति कई वस्तुएँ मिली हैं, जिनका प्रयोग वे नापतौल के लिए किया करते थे।

आज की तुलना में सिंधु प्रदेश काफी अधिक उपजाऊ था। पूर्व काल में प्राकृतिक वनस्पति बहुत थी, जिसके कारण यहाँ अच्छी वर्षा होती थी। यहाँ के वनों से ईंटें पकाने तथा इमारत बनाने के लिए लकड़ी बड़े पैमाने पर इस्तेमाल में लाई जाती थी, जिसके कारण धीरे-धीरे वनों का विस्तार सिमटता गया।

सिन्धु की उर्वरता का एक कारण सिन्धु नदी से प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ थी। गांव की रक्षा के लिए खड़ी पकी ईंटों की दीवार से पता चलता है कि यहाँ बाढ़ हर वर्ष आती थी। यहाँ